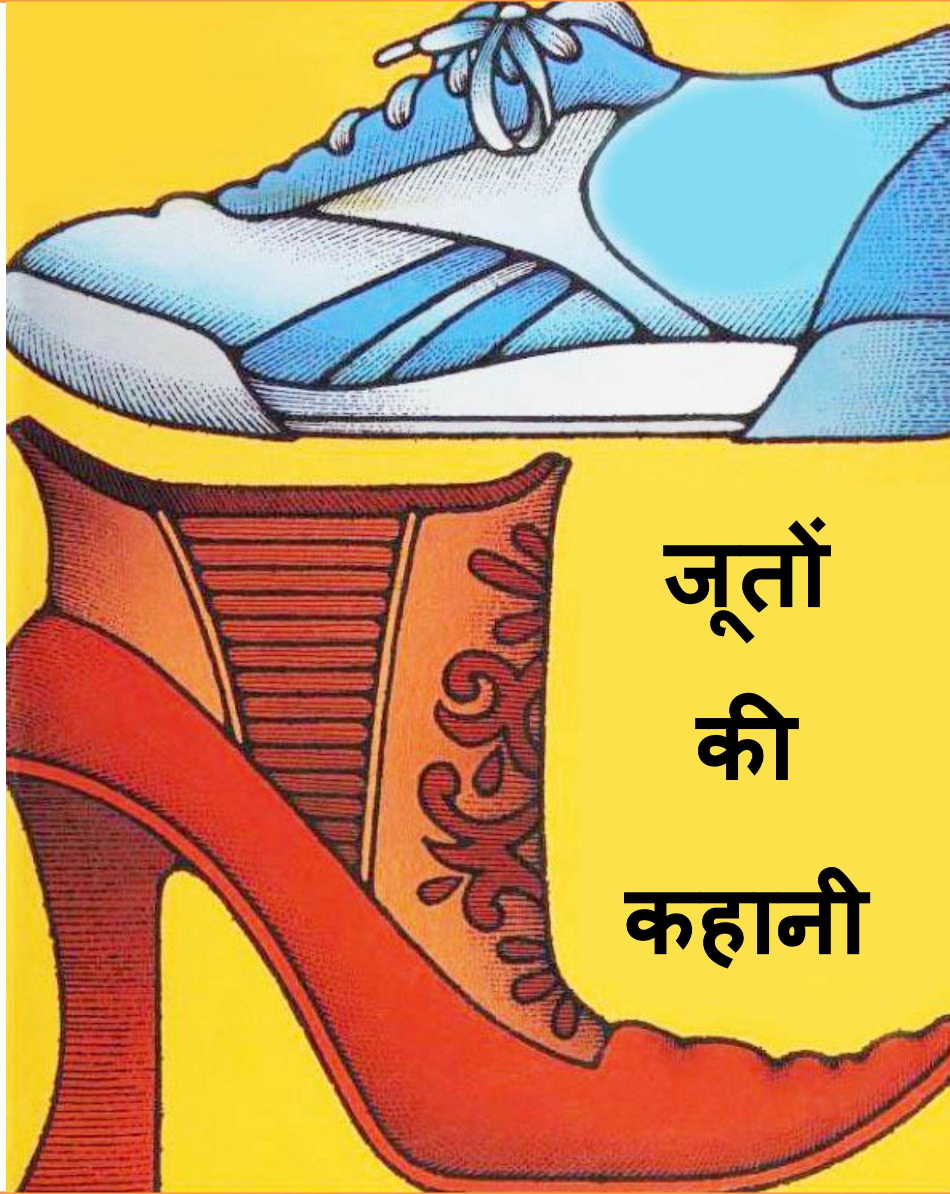
जूतों की कहानी



घास आपके पैरों को अच्छी लगती होगी. रेत भी आपके पैरों पर अच्छी लगती होगी. कभी-कभी जूते नहीं पहनना एक अच्छी बात है. लेकिन ज़्यादातर समय, आपको पैरों को जूतों की ज़रूरत होगी.

आजकल जरूरत पड़ने पर आपको जूते आराम से मिल सकते हैं. आपको हर तरह के जूते मिल सकते हैं. आप उन्हें जूतों की दुकानों में खरीद सकते हैं.

लेकिन बहुत समय पहले, जूतों की कोई दुकान नहीं थी. बहुत समय पहले, जूते बिल्कुल थे ही नहीं!



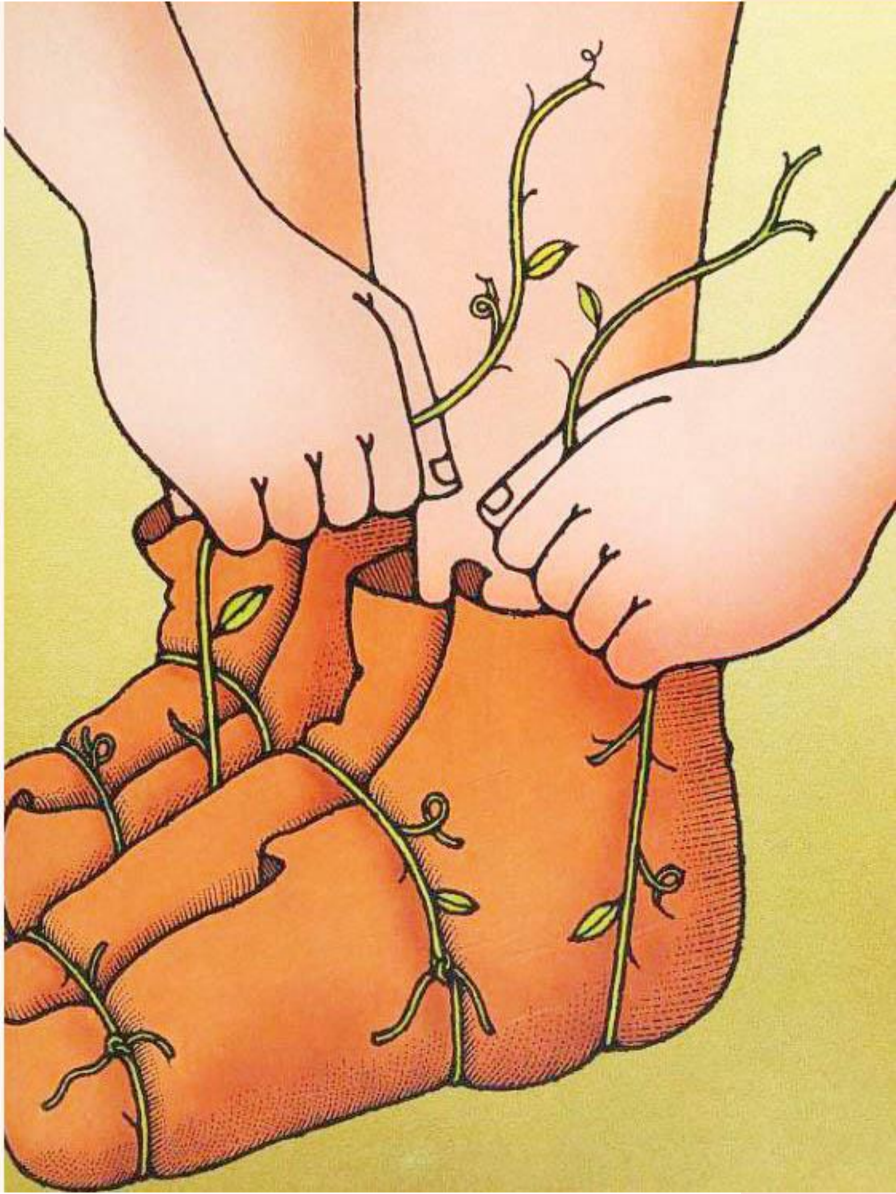
हम पता नहीं कि सबसे पहले जूते कब बने. लेकिन वो बहुत समय पहले बने होंगे.

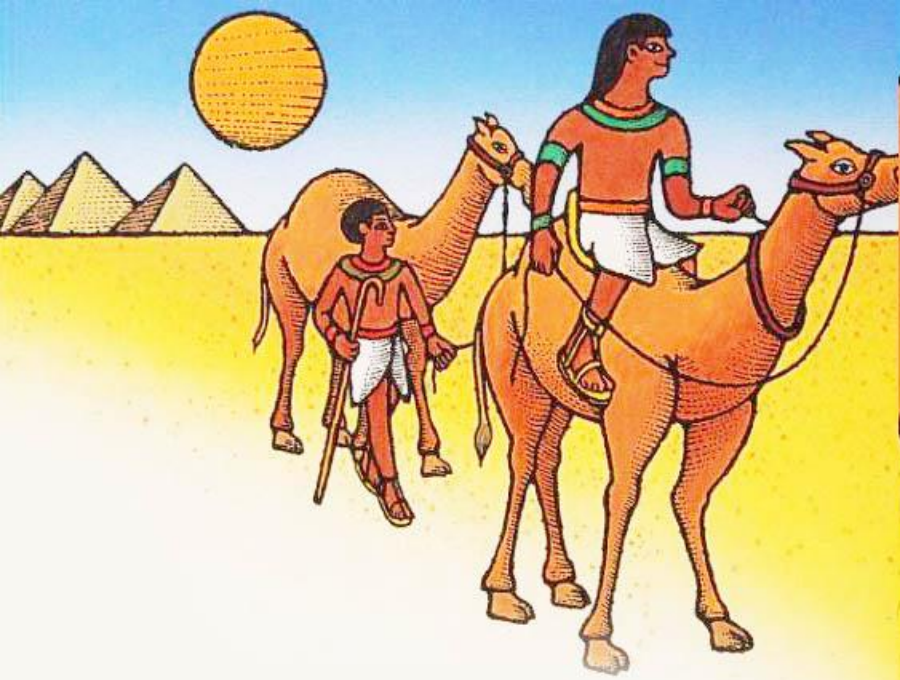
अब हम समय में, बहुत पीछे जाएंगे. आपके पैर ठंडे हैं. आपको उन्हें गर्म रखने की जरूरत है. तब आप जानवरों की खाल का एक टुकड़ा लेंगे और अपने पैरों को खाल से ढंक देंगे.

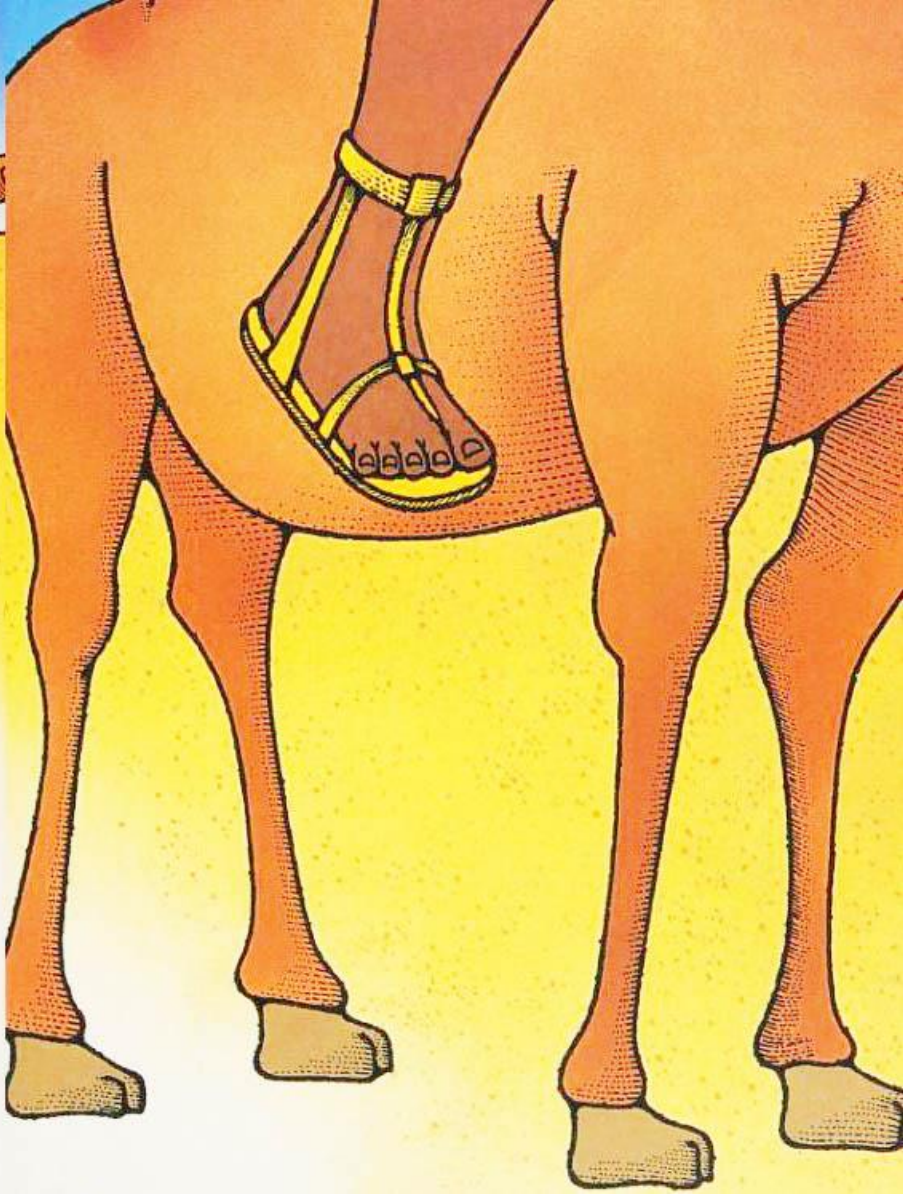


अब आप अपने पैर गर्म महसूस करेंगे. लेकिन आप चाहेंगे कि जानवर की खाल आपके पैरों पर से गिरे नहीं और वो टिकी रहे. फिर आप अपने पैरों पर खाल को बांधने के लिए किसी बेल का इस्तेमाल करेंगे.

हो सकता है कि शुरू के कुछ जूते इसी तरह बने हों.



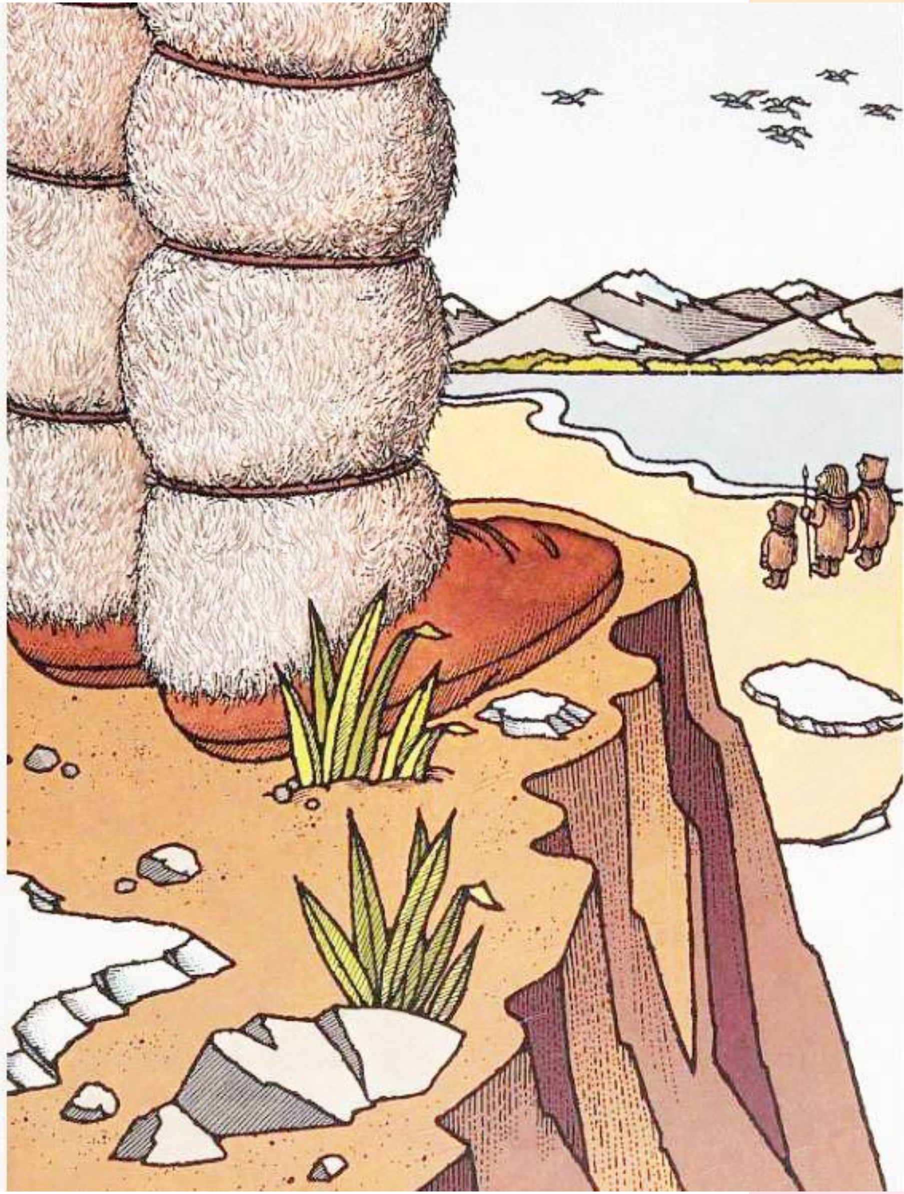


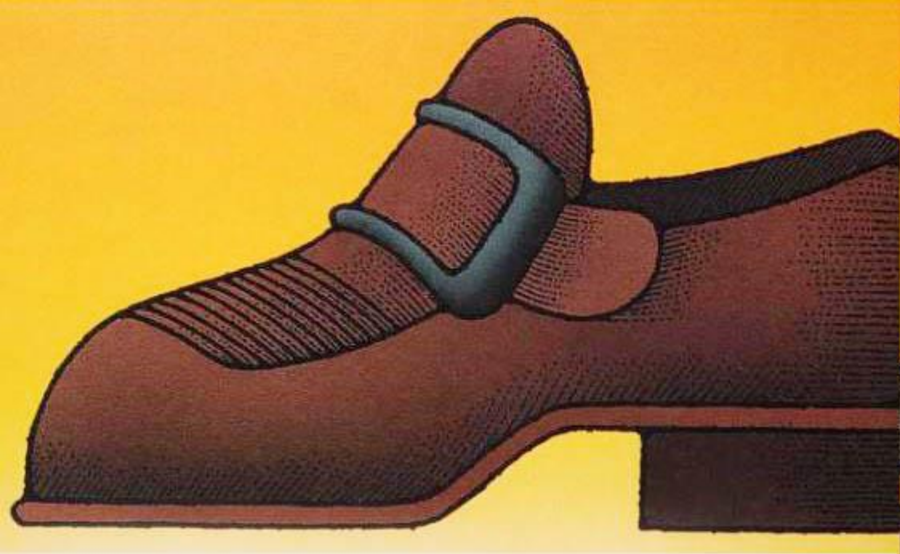


बहुत समय पहले मिस्र में लोग सैंडल पहनते थे. सैंडल गर्म और रेतीले स्थानों पर चलने के लिए अच्छी होती थीं.

मिस्र एक बहुत गर्म, रेतीला स्थान था. 4,000 साल पहले भी मिस्र में लोग सैंडल पहनते थे! आज भी मिस्र और अन्य गर्म स्थानों में लोग सैंडल पहनते हैं.

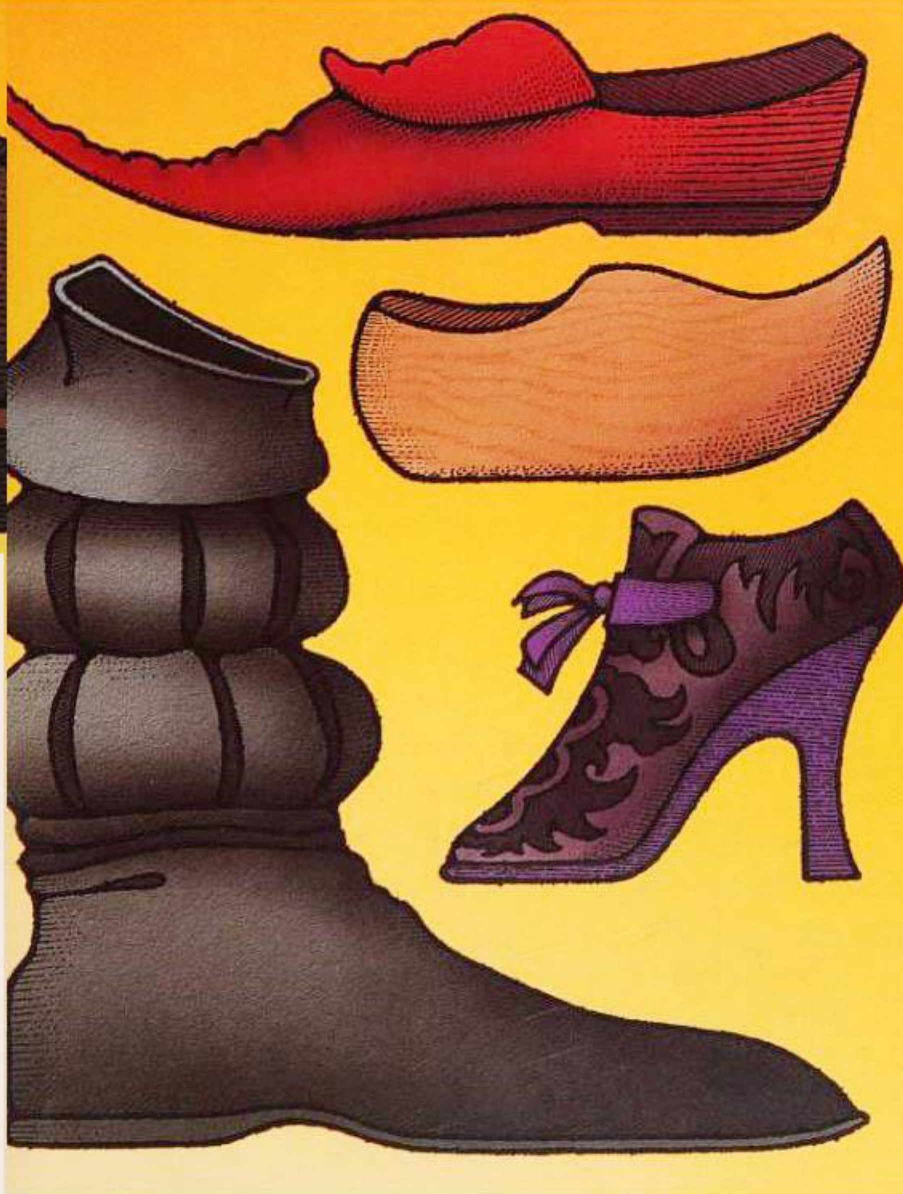
जब ठंड होती है, तो आपको अपने पैरों को गर्म रखने के लिए एक बंद जूतों की आवश्यकता होगी. स्कॉटलैंड एक ऐसी जगह है जो कभी-कभी बहुत बारिश और ठंड होती है. लगभग 3,000 साल पहले स्कॉटलैंड में लोग जूते पहनते थे. लोग अपने पैरों पर जूते बांधते थे. उससे उनके जूते गिरते नहीं थे.





समय के चलते, तमाम तरह के जूते बने. कुछ जूते लकड़ी से बनाए गए. कुछ जूते बहुत ऊँचे थे और उन्हें पहनकर चलना कठिन था.

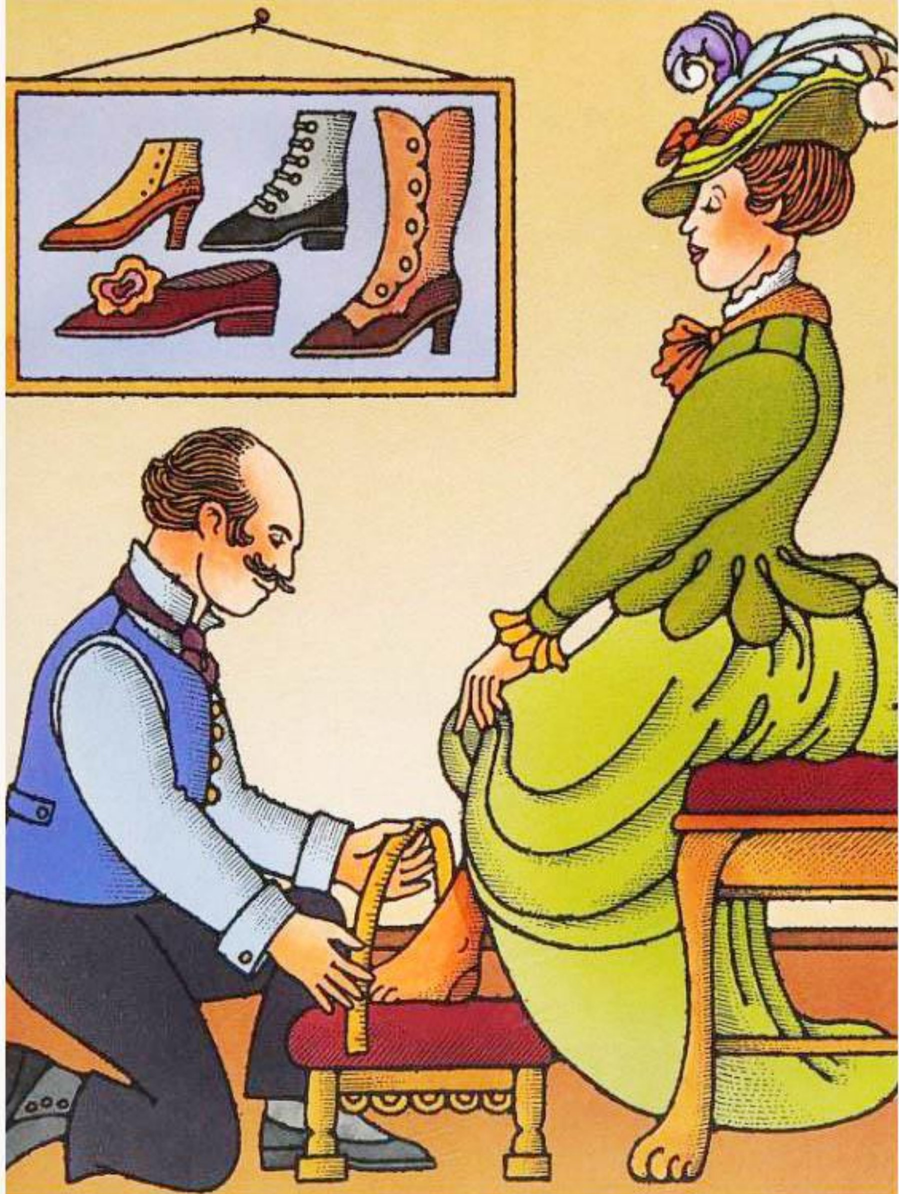
1300 के दशक में, जूतों की आगे से बहुत लंबी नोकें होती थीं. कभी-कभी लोगों को चल पाने के लिए उन नोकों के सिरों को अपने पैरों पर बांधना पड़ता था! 1500 के दशक में, जूतों के पंजे बहुत चौड़े होते थे. ऐसे जूते हमें आज बड़े अजीब लगेंगे.



पुराने ज़माने में लोगों को जूते कहाँ से मिलते थे?

लंबे समय तक, ज्यादातर लोग जूते खरीदने के लिए मोची के पास जाते थे. मोची, जूते बनाने वाले छोटी-छोटी दुकानों में काम करते थे.

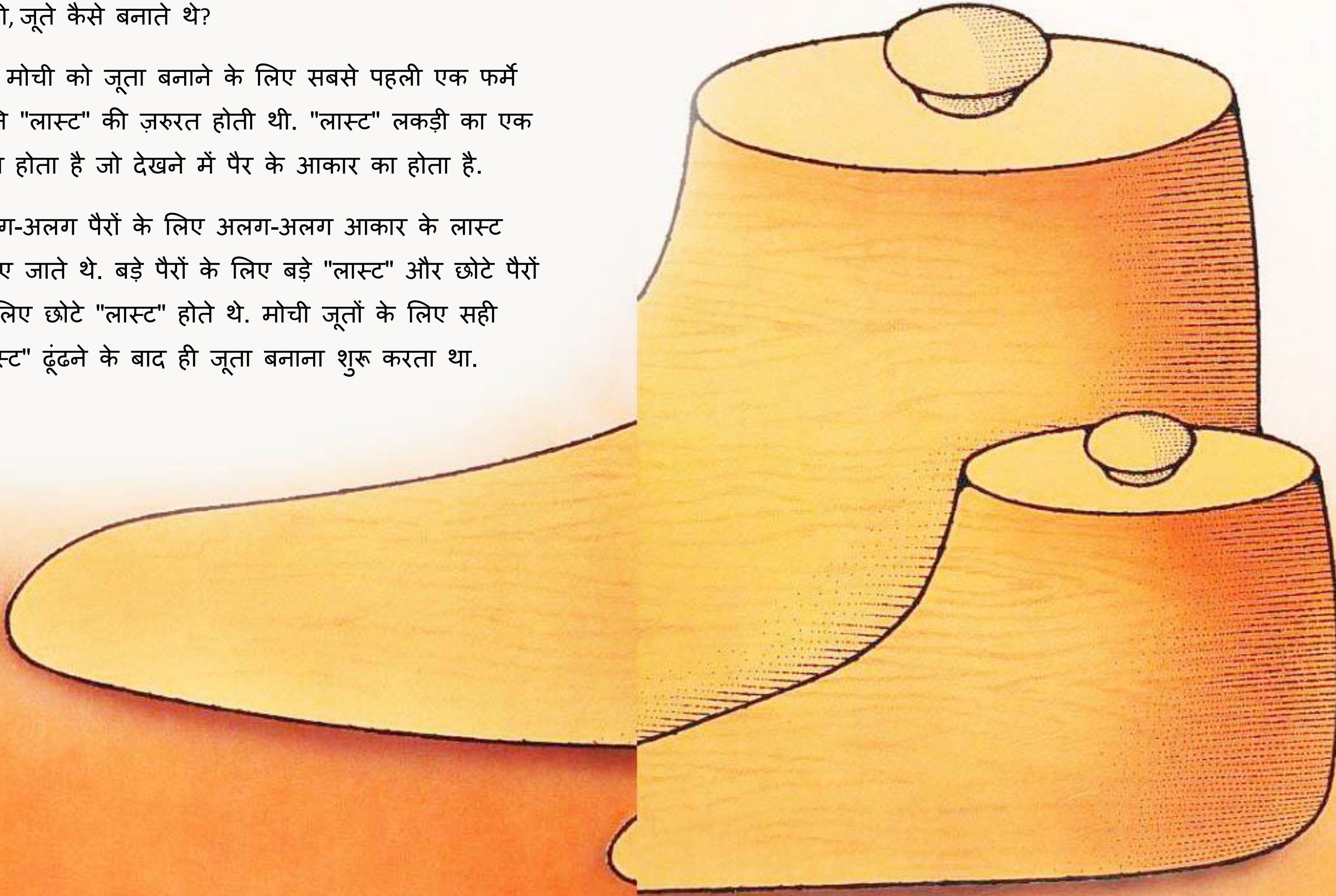
यदि आप किसी मोची की दुकान में जाते तो हो सकता है कि दुकान में कुछ जूते होते. लेकिन हो सकता है कि वो जूते आपके सही नाप के न होते. फिर आपको मोची से सही नाप के जूते बनवाने की ज़रुरत पड़ती. उसमें काफी समय लग सकता था. उस समय, जूते बनाने वाले एक-एक करके ही जूते बनाते थे.



मोची, जूते कैसे बनाते थे?

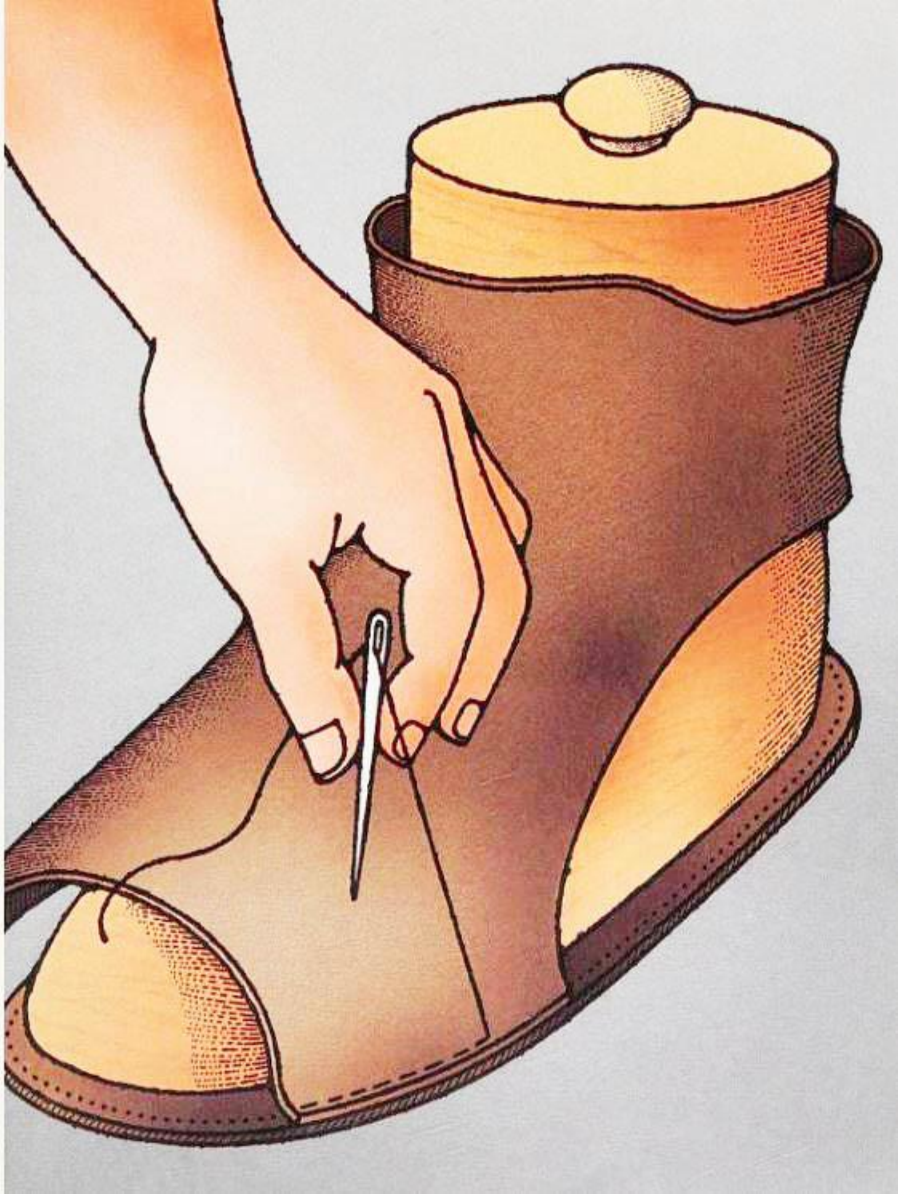
एक मोची को जूता बनाने के लिए सबसे पहली एक फर्मे यानि "लास्ट" की ज़रुरत होती थी. "लास्ट" लकड़ी का एक फर्मा होता है जो देखने में पैर के आकार का होता है.

अलग-अलग पैरों के लिए अलग-अलग आकार के लास्ट बनाए जाते थे. बड़े पैरों के लिए बड़े "लास्ट" और छोटे पैरों के लिए छोटे "लास्ट" होते थे. मोची जूतों के लिए सही "लास्ट" ढूंढने के बाद ही जूता बनाना शुरू करता था.



जब मोची को उसकी ज़रूरत के अनुरूप "लास्ट" मिलता, तो वे चमड़ा लेता था और उसे नरम बनाने के लिए पानी में डालता था. फिर वो चमड़े के कुछ टुकड़े काटता था. एक टुकड़ा जूते के ऊपरी हिस्से के लिए होता था, और दूसरा नीचे हिस्से के लिए होता था.

मोची, जूते का आकार देने के लिए चमड़े के टुकड़ों को "लास्ट" पर रखता था. फिर मोची टुकड़ों को एक साथ सिलता था. इस प्रकार मोची जूते बनाता था.



जैसे-जैसे समय बीतता गया, मोचियों ने जूतों को बेहतर फिट करने के तरीके ढूंढे.

बाएँ पैर और दाएँ पैर दोनों अलग-अलग दिखते हैं. लेकिन 1818 से पहले, मोची बाएँ और दाएँ पैर के जूते बनाने के लिए एक ही "लास्ट" का उपयोग करते थे. उससे बाएं पैर का जूता दाहिने पैर के जूते के समान ही होता था. ऐसे जूते पैरों में ठीक से फिट नहीं होते थे!

फिर 1818 में, मोची निर्माताओं ने बाएँ जूते और दाएँ जूते के लिए अलग-अलग "लास्ट" का उपयोग करना शुरू किया. लोगों को ये नए जूते पसंद आए. वे बहुत अच्छे से फिट होते थे!







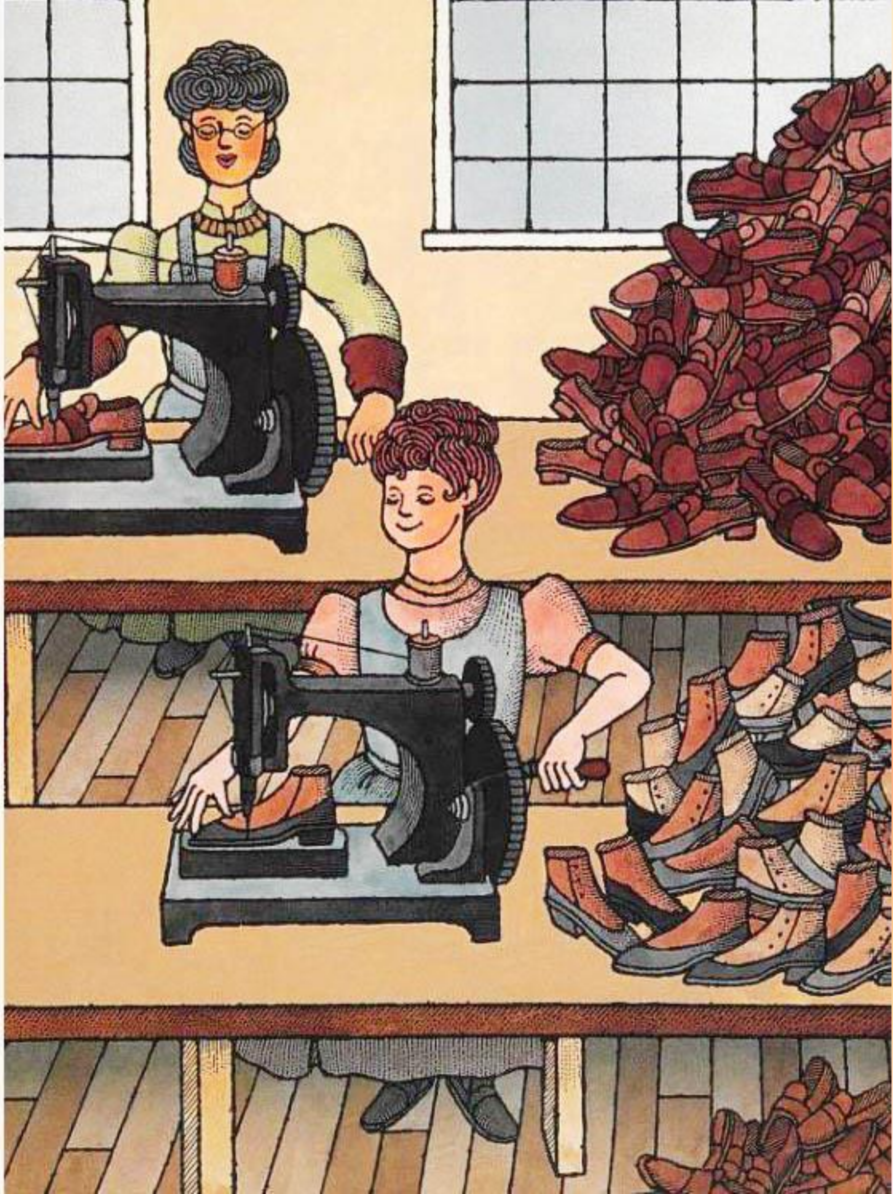
जब मोचियों ने जूतों को बेहतर फिट बनाना शुरू किया, लगभग उसी समय उन्होंने जूते बनाने की नई तकनीकें भी खोजीं.

मोचियों को समझ में आया कि उन्हें एक-एक करके जूते बनाने की ज़रूरत नहीं थी. फिर कई मोची एक-साथ मिलकर काम करने लगे.

एक मोची चमड़े के पैटर्न या नमूने काटता. दूसरा मोची उन्हें "लास्ट" में आकार देता, और तीसरा मोची चमड़े को एक साथ सिलता था. इस प्रकार पहली जूता फ़ैक्टरियों की शुरुआत हुई.

1851 में पहली सिलाई मशीन में इज़ाद के बाद, कारखाने पहले की तुलना में, अधिक जूते बनाने लगे. सिलाई मशीनें तेजी से जूते सिल सकती थीं.

अब जूतों की दुकानें अपने जूते सीधे फ़ैक्टरियों से खरीदती थीं. अब लोगों को अपने जूते बनवाने के लिए किसी मोची का इंतज़ार नहीं करना पड़ता था. वे जूतों की दुकान में जाकर अपने लिए सही साइज़ के जूते खरीद सकते थे.



आजकल ज़्यादातर जूते बड़ी-बड़ी फ़ैक्टरियों में बनते हैं. फैक्ट्रियों में लोग जूते बनाने के लिए कई तरह की मशीनों का इस्तेमाल करते हैं. वहां पर चमड़ा काटने के लिए मशीनें और उसे आकार देने के लिए मशीनें होती हैं, और चमड़ा सिलने के लिए भी मशीनें होती हैं. अब लोग एक ही समय में ढेर सारे जूते बना सकते हैं.



आप चलते समय सभी लोगों के पैरों को देखें. आप कैसे जूते देखते हैं? क्या आप काम के जूते देखते हैं? क्या आप ऊँची एड़ी वाले जूते देखे हैं? क्या आप स्नीकर्स देखते हैं?

आज जब आप किसी स्टोर में जाएंगे तो आप वहां कई तरह के जूते देख पाएंगे. आप ऐसे जूते चुन सकते हैं जो आपके लिए बिल्कुल सही हों!

